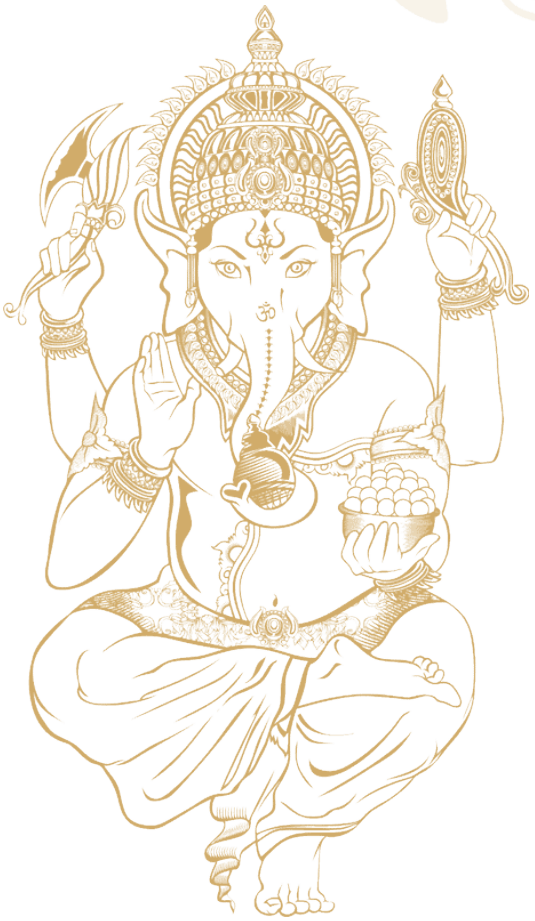

Mr.a

26 Nov 2025

07:54 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120333701**

तिथि 26/11/2025 **समय** 19:54:00 **वार** बुधवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:12
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	23:55:56 घं
वेलान्तर	00:12:42 घं
सूर्योदय	06:52:51 घं
सूर्यास्त	17:24:07 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	6
नक्षत्र	श्रवण
योग	ध्रुव
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खो-खोकरन
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	शुक्र
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

चन्द्र 2वर्ष 2मा 21दि

चन्द्र	26/11/2025
	17/02/2028
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	26/11/2025
केतु	18/12/2025
शुक्र	18/08/2027
सूर्य	17/02/2028

योगिनी

मंगला 0वर्ष 2मा 20दि

मंगला	26/11/2025
	16/02/2026
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	26/11/2025
संकटा	26/11/2025
	16/02/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:09:06	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			10:21:53	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	सूर्य	मित्र राशि	1.02	मातृ	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			20:21:59	मक	श्रवण	4	चंद्र	केतु	सम राशि	1.54	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	21:49:13	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	सूर्य	स्वराशि	0.92	अमात्य	भ्रातृ	साधक
बुध	व		27:24:30	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि	1.24	आत्मा	ज्ञाति	क्षेम
गुरु	व		00:33:44	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.12	ज्ञाति	धन	क्षेम
शुक्र			00:26:49	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	चंद्र	सम राशि	1.03	कलत्र	कलत्र	क्षेम
शनि	व		00:56:23	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	1.04	पुत्र	आयु	क्षेम
राहु	व		20:08:36	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		20:08:36	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

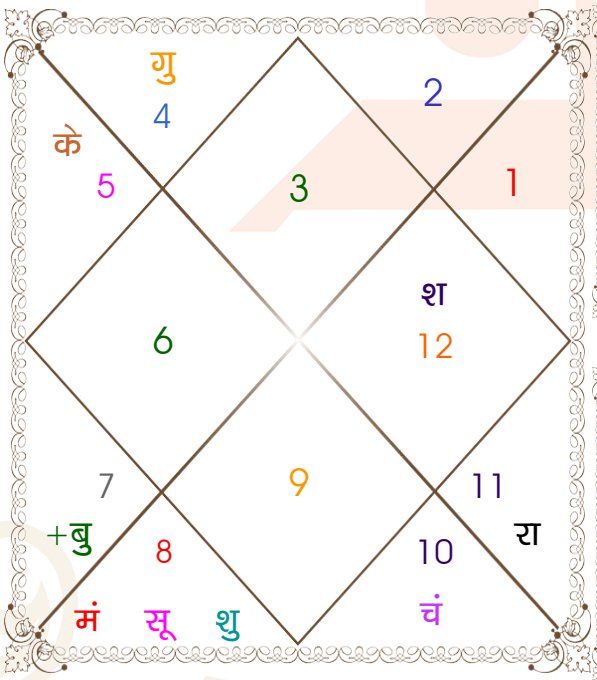

चन्द्र कुंडली

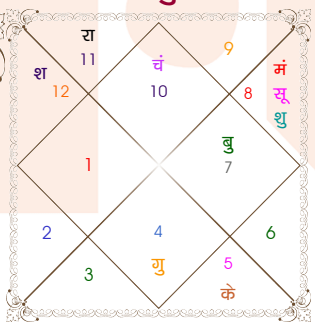

नवमांश कुंडली

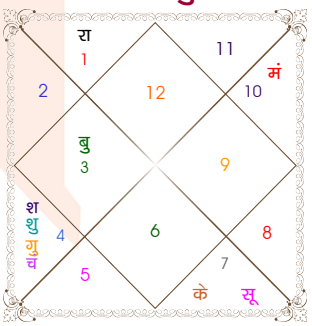

सर्वाष्टकवर्ग

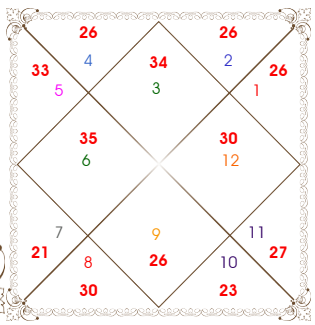

दशमांश कुंडली

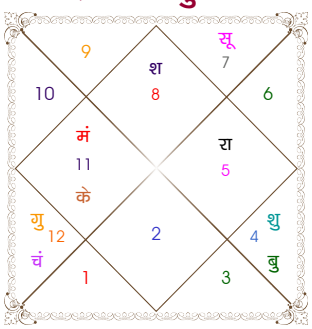

नक्षत्रफल

आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, वर्ग मार्जार, योनि वानर, नाड़ी अन्त्य तथा गण देव होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "खो" या "खौ" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

आप विविध प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में नित्य रूचिशील रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी संतति में पुत्रों की सख्यां अधिक रहेगी तथा इनसे आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा। साथ ही सामाजिक क्षेत्र विस्तृत होने के कारण आपके मित्रों की संख्या भी अधिक रहेगी तथा इन सबसे आपको पूर्ण आदर तथा सहयोग प्राप्त होगा। सज्जनों एवं विद्वानों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनकी सेवा तथा सहयोग करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। आप शत्रु वर्ग का नाश करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समस्त शत्रुवर्ग आपसे भयभीत तथा प्रभावित रहेगा। इसके अतिरिक्त शास्त्रों तथा पुराणों आदि धार्मिक ग्रन्थो के प्रवचन आदि को सुनने में भी आप पूर्ण रूप से रूचिशील रहेंगे।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा तथा पूजा का भाव रहेगा एवं समयानुसार आप इनकी पूजा तथा सेवा भी करते रहेंगे। आप एक धनाढ्य व्यक्ति होंगे तथा जीवन में सुख पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। साथ ही अपनी तीव्र बुद्धि तथा परिश्रम के द्वारा किसी उच्चाधिकार प्राप्त उच्च पद को भी प्राप्त कर सकेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेगी तथा जीवन में समस्त धार्मिक कृत्यों का श्रद्धापूर्वक अनुपालन करते रहेंगे।

श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।
जातक परिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में आप एक गणमान्य व्यक्ति होंगे तथा सभी वर्गो के लोग आपको यथा योग्य आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों में पारंगत होने से आपकी ख्याति समाज में एक विद्वान के रूप में दूर दूर तक व्याप्त रहेगी। आप एक दयालु पुरूष होंगे तथा सबके प्रति उदारता का व्यवहार रखेंगे। साथ ही दीन दुःखियो की आप

विशेष रूप से सहायता करेंगे। आप एक सुशील तथा गुणवती भार्या के पति होंगे। एवं विपुल धन सम्पति से युक्त रहेंगे। अतः आपका सांसारिक जीवन अत्यन्त ही सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप कृतज्ञता के गुण से युक्त रहेंगे तथा किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर उसका उपकार स्वीकार करेंगे तथा हृदय से उसका आभार भी प्रकट करेंगे। आपकी इस प्रवृति से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे। आपका शारीरिक स्वरूप भी सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा सन्ततियों की संख्या भी अधिक रहेगी। इसके अतिरिक्त आप सर्व प्रकार के गुणों से सुसम्पन्न होकर अपना जीवन यापन करेंगे तथा प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगे।

कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।
श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीडित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आप का कद ऊंचा तथा मस्तक विशालता से युक्त रहेगा। आपका शारीरिक स्वरूप दर्शनीय तथा नेत्र सुन्दर रहेंगे। साथ ही शारीरिक बल भी मध्यम रहेगा। संगीत शास्त्र के प्रति आपके मन में स्वभाव से ही आकर्षण रहेगा अतः इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप नित्य यत्नपूर्वक रुचिशील रहेंगे। ठण्ड से आपको व्याकुलता की अनुभूति होगी तथा इसे सहन करने में आप अपने को अक्षम समझेंगे। सत्य के प्रति आपके मन में सदैव निष्ठा रहेगी तथा जीवन में सर्वदा इसका पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। समाज में आप एक आदरणीय व्यक्ति रहेंगे। इसके साथ ही आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर

तक फैली रहेगी। आप कभी कभी अल्प मात्रा में क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे। आप के मन में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रहेगा। सभी लोगों के साथ समानता एवं प्रेम का व्यवहार करेंगे। अनावश्यक घृणा तथा द्वेष का भाव आपके मन में किसी के भी प्रति नहीं रहेगा। आप अपने आयु से अधिक आयु वाले लोगों से मैत्री संबंध रखना पसन्द करेंगे तथा उनसे ही आपके विशेष संबंध रहेंगे। लेखन कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी अतः काव्य सृजन में आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। आपमें पूर्णोत्साह की भावना का अभाव रहेगा परन्तु भाग्यबल से अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वयं ही अल्प परिश्रम द्वारा सिद्ध होते रहेंगे। साथ ही लोलुपता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा फलतः कई बार आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा परेशानियां भी उत्पन्न होंगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप सदैव अपने परिवार के पालन में तत्पर रहेंगे। साथ ही दूसरे लोगों को दिखाने के लिए धर्म के प्रति श्रद्धा रखेंगे एवं धार्मिक कृत्यों के अनुपालन का भी प्रदर्शन करेंगे। आपका कटि भाग पतला होगा। आप दूसरे लोगों की बातों से शीघ्र ही सहमत होने वाले होंगे एवं उनके अनुसार ही कई बार कार्य करने को भी उद्यत हो जाएंगे। आप में आलस्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः आपके कार्य धीरे धीरे ही सम्पन्न होंगे। भ्रमण तथा यात्रा के प्रति आपके मन में विशेष रूचि रहेगी। अतः आपका अधिकांश समय इसी पर व्यतीत होगा। आप कठिन कार्यों को करने तथा सुदूर क्षेत्रो में जाने के लिए भी सदा उत्सुक रहेंगे। अतः लोग आपके साहस तथा निर्भीकता से प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप कठोर प्रवृति का भी प्रदर्शन अन्य जनों के समक्ष करेंगे। वायु जनित रोगों से आप व्याकुल होंगे तथा जीवन में समय समय पर इनसे पीड़ित रहेंगे। इसके अतिरिक्त सर्वप्रकार के सत्वगुणों से युक्त होकर आप जीवन में इनका अनुपालन करेंगे तथा आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने परिवार या कुल में विशेष सम्मान अर्जित करने में प्रायः असफल ही रहेंगे परन्तु कुल या परिवार की रीति को आगे बढाने तथा मर्यादा का अनुपालन करने में आपका विशेष योगदान रहेगा तथा इस कार्य को करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। स्त्री के आप हमेशा नियंत्रण में रहेंगे तथा सभी सांसारिक कार्यों को उसी के कहे अनुसार ही सम्पन्न करेंगे एवं स्वतंत्र निर्णय लेने में सर्वदा असमर्थ रहेंगे। आपको विभिन्न शास्त्रो का पूर्ण

ज्ञान रहेगा। अतः एक विद्वान के रूप में भी समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी। महिलावर्ग में भी आप प्रायः प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा वे सब नित्य आपकी प्रशंसा करेंगे। पुत्र संतति से आप सुसम्पन्न रहकर जीवन में इनका सुख भी प्राप्त करने में सफल रहेंगे। धनैश्वर्य से आप युक्त रहेंगे तथा समाज में एक धनवान व्यक्ति कहलाएंगे। आपके अधिकाँश सेवक सुन्दर एवं गुणवान रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। आप में नैसर्गिक रूप से त्याग की भावना भी रहेगी। अतः अवसरानुकूल समाज या परिवार में इस प्रवृति का अनुपालन करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आप एक विशाल परिवार के स्वामी होंगे तथा सुख प्राप्ति के लिए नित्य चिन्तनशील रहेंगे। साथ ही सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए भी आप पूर्ण प्रयत्न करेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

जीवन में आप किसी तीसरे आदमी की सम्पति को प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही सामाजिक जनों की भलाई के लिए भी आप चिन्तित होंगे एवं उनकी समस्याओं के समाधान के लिए नित्य सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सलाहकार आदि के कार्य में भी आप निपुण होंगे तथा अन्य लोग आपकी इस प्रवृति से समय समय पर लाभान्वित भी होते रहेंगे। भाई बन्धुओं का आप पूर्ण रूप से पालन करेंगे एवं सुख दुःख में इनका पूर्ण सहयोग करेंगे। अतः इनसे आपको पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा। आप में वीरता के गुण भी रहेंगे अतः साहस एवं निर्भयतापूर्वक सभी समस्याओं का समाधान करेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

आप गीत शास्त्र के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे तथा इसका आपको विशेष ज्ञान रहेगा। आपका शरीर कान्ति एवं लावण्यता से सुशोभित होगा अतः शारीरिक स्वरूप दर्शनीय तथा आकर्षक होगा। काम भावना की भी आप में प्रवलता रहेगी तथा कभी कभी इससे आप व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

देव गण में पैदा होने के कारण आप श्रेष्ठ एवं मधुरवाणी से युक्त रहेंगे। आपकी बुद्धि सरलता से युक्त रहेगी। आप सुगमतापूर्वक अपने विचारों को अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे तथा सुगमता से ही उनके विचारों को भी ग्रहण करेंगे। अल्प मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना आपको अत्यन्त ही प्रिय लगेगा। अन्य लोगों के गुणों के विषय में आपका ज्ञान विस्तृत रहेगा तथा अच्छे बुरे की भी आप को पहचान रहेगी। आप स्वयं भी महान लोगों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से युक्त रहेंगे। साथ ही विविध प्रकार के धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक होगा तथा दानशीलता की भावना नैसर्गिक रूप से आपके मन में विद्यमान रहेगी। अतः दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों के प्रति इस भावना का आप यत्नपूर्वक पालन करते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा सादगी पूर्ण जीवन बिताने के लिए सदैव यत्नशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक महान विद्वान के रूप में समाज में सम्मान तथा यश भी अर्जित करेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति प्रारम्भ से ही चंचल रहेगी तथा आपके अधिकाँश कार्य चंचलता से पूर्ण होंगे। मीठे पदार्थो के भक्षण में आपकी विशेष रूचि रहेगी। धन के प्रति आप में लोलुपता की भावना रहेगी तथा इसे प्राप्त करते समय अत्यन्त ही आतुरता या अधीरता का प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृति कलह या विवाद में भी रहेगी। अतः समाज में अन्य लोगों से आपका परस्पर विवाद भी चलता रहेगा। आपकी समस्त सन्ततियां गुणवान तथा बुद्धिमान होंगी। इसके साथ ही आप साहस पूर्वक सांसारिक समस्याओं का समाधान करके जीवन का सुखपूर्वक उपभोग करेंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरुष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा

प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनियोग, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक होगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार,

चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में यत्न पूर्वक वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय ठीक न चल रहा हो मन में चिन्ताएं, शारीरिक व्याधियां, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के भी नियमित रूप से उपवास करने चाहिए। इसके साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंच धातु, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। इससे अशुभ फलों का प्रभाव कम होगा तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विाद्वन से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।